कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 11, (अप्रैल, 2024)
पृष्ठ संख्या 20–21

नर्सरी में कीट प्रबंधन

अमर सिंह[1], अक्षय कुमार सिंह प्रतिहार[2], डॉ. एम.एम. कुमावत[3] एवं डॉ. एन.एल. डांगी[4]

[1]विद्यावाचस्पति छात्र, कीटविज्ञान विभाग,
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर
[2]स्नातकोत्तर छात्र, कीट विज्ञान विभाग
[3]आचार्य एवं अधिष्ठाता, कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, बायतु
[4]सहायक आचार्य, कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, जोधपुर, भारत।

Email Id: amarchahar15@gmail.com

स्वस्थ पौधों के लिए नर्सरी को स्वस्थ रखना अति आवश्यक हैं। नर्सरी में कीट प्रबंधन यदि सही समय पर नहीं किया जाए तो पौधों की बढवार पर बुरा प्रभाव पडता है। पौधे वास्ताविक वृद्धि नहीं कर पाते हैं, जिसके कारण उनसे वांछित उत्पादन नहीं मिल पाता है।

नर्सरी के प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन

1. सफेद मक्खी:

यह कीट नर्सरी में दो तरह से नुकसान पहुँचाता है पहला पौधों का रस चूसकर तथा दूसरा विषाणु रोग फैलाकर। इस कीट के शिशु एवं प्रौढ़ दोनों ही पौधों को हानि पहुँचाते हैं। इस कारण पौधों की बढ़वार रुक जाती है। पौधा छोटा रह जाता है। तथा फल देने की क्षमता कम हो जाती है। यह कीट सफेद रंग का तथा पत्तियों की निचली सतह में मिलता है।

नियंत्रण

- पौधशाला को नाइलोन जाली से ढककर रखें ताकि कीट प्रवेश ना कर सकें।
- पौध ज्यादा घनी नहीं होनी चाहिए।
- कीटनाशक इमिडाक्लोप्रिड 0.4 मि. ली. प्रति लीटर या मिथाइल डिमटोन 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर 15–20 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

2. हरा मच्छर (जैसिड):

यह मुख्य रुप से सब्जियों की पौध को ज्यादा नुकसान पहुँचाता है। शिशु एवं प्रौढ दोनों अवस्थाएं ही पौधों का रस चूसकर हानि पहुँचाते हैं यह विषाणु रोग वाहक हरे रंग का कीट है। जो पत्तियों पर आसानी से दिखता नहीं है।

नियंत्रण

- नीम तेल 4 प्रतिशत घोल को 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- कीटनाशक इमिडाक्लोप्रिड 0.4 मि. ली. प्रति लीटर या मिथाइल डिमटोन 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर 15–20 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

3. थ्रिप्सः

यह कीट भी पौधों का रस चूसकर नुकसान करते हैं। शिशु एवं प्रौढ दोनों अवस्थाएं हनि पहुँचाती हैं। यह कीट सूक्ष्म आकार के कोमल, हल्के पीले–भूरे रंग का होता है।

नियंत्रण

- नीम तेल 4 प्रतिशत घोल को 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- इमिडाक्लोप्रिड 0.4 मि. ली. प्रति लीटर या मिथाइल डिमटोन 1 मि. ली प्रति लीटर पानी में घोलकर 15–20 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- इमिडाक्लोप्रिड से (2.5 ग्राम प्रति किग्रा) बीज को उपचारित करके बोने से कीट का नियंत्रण सम्भव है।

4. लाल मकड़ी:

गर्मी अधिक होने पर इसके द्वारा होने वाला नुकसान बढ़ जाता हैं। शिश एवं प्रौढ दोनों अवस्थाएं ही पौधों का रस चूसकर हानि पहुँचातें हैं। रस चूसने से पत्तियों की ऊपरी सतह पर पीलापन आ जाता हैं। और अधिक प्रकोप होने पर पत्तियाँ लाल होकर सूखने लगती हैं।

नियंत्रण

- डाइकोफाल या प्रोपारजाईट (ओमाइंट) 2 मि. ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- पानी की फुहार से जाल नहीं बन पाता हैं जिससे नुकसान कम हो जाता है।

5. दीमक:

इस कीट द्वारा नुकसान शुरुआत में नजर नहीं आता है। यह जड़ों को काटकर नुकसान पहुँचाती हैं। पौधा सूखने लगता हैं। तथा जमीन से खीचनें में आसानी से उखड़ जाता हैं। जमीन में इसका प्रकोप अधिक होने पर पौध तैयार करना मुश्किल होता हैं।

नियंत्रण:

- नर्सरी की जमीन साफ सुथरी होनी चाहिए।
- बिना सड़े गोबर खाद का प्रयोग नही करना चाहिए।
- नीम की निम्बोली पीसकर पौधशाला की मृदा में मिलाना चाहिए।
- क्लोरोपाइरीफॉस या क्यूनालफॉस 1 मि. ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर सिंचाई के साथ देना चाहिए।

6. कटवर्म:

यह कीट भी पौधों की जड़ों को काटकर हानि पहुँचातें हैं। इसके प्रकोप से नर्सरी में पौधों की संख्या घट जाती हैं।

नियंत्रण:

- नीम की निम्बोली पीसकर मिट्टी में मिलायें।
- क्लोरोपाइरीफॉस या क्यूनालफॉस 1 मि. ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर सिंचाई के साथ देना चाहिए।

7. पर्णसुरंग कीट:

यह कीट पत्तियों में सुरंग बनाकर हरे भागों को खाकर नुकसान करते हैं। जिससे पत्तियों में टेढ़ी–मेढ़ी धारीयाँ नजर आती हैं। यह कीट पौध अवस्था में ज्यादा हानि करता है।

नियंत्रण:

- पौधे ज्यादा सघन नहीं होने चाहिए।
- नत्रजन का ज्यादा प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- नीम तेल 4 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- कीटनाशक डाइमेक्रोन 0.5 मि. ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

8. पत्ती खाने वाली इल्ली:

यह इल्ली पौधे के मुलायम भागों को खाकर नुकसान करती है। जिससे पौधों की बढ़वार रुक जाती हैं।

नियंत्रण:

- गर्मियों में नर्सरी के स्थान की गहरी जुताई करके खुला छोड़ देवें।
- कीटनाशक क्यूनालफॉस या मोनोकोटोफॉस 2 मि. ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव कर।